

DPN 6328

Title : ज्योतिष जन्त्र JYOTISHA JANTRA

Run. No. 7019

Cat. No. 47

Micro. No.

Subject Astrology and Mantras

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. / New. / New. / Nep. /

Size in cms. 20 X 8.8

Folios 8

Lines (in a page) 5 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणिन्द्र रत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Phanindra Ratna

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Bajracharya

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

चतुर्थस आदित वतसा रोग जुय, दुषी जुय ॥

१७ शादितवनसा। अहिं वीशागशयुगपुदयव। ८२
१७ बहीरवनसा। आभि शदयदयीलागाशयुग। ८१२
१७ गमनवनसा। शयशयथवपुत्रयाकन। सत्रयाक
१७ नकयदयुग। ८१२ वधवनसा। मिमाकन। कुरुमाकनकन
१७ शिखय। ८१२ वृक्षस्यतीवनसा। पुत्रशादययुग। थशाक। शय
१७ शाका। ८१२ शुक्रवनसा। सत्रवीरुग। ८१२ शुक्नीयुगवन
१७ सा। वनयपुत्रववीशागशयुग। ८१२। वक्रमसा। आद

धनव नवन मा ७ व थवन नव वा मर्व वा दीरु म् व
 १७२ रुम १७२ दिनवन सा १७२ गीरु म् गसंरु म् म्
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ मी सखा म् म् १७२
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ म् रुम रुम १७२ रुम रुम १७२
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ रुम रुम १७२ रुम रुम १७२
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ रुम रुम १७२ रुम रुम १७२

१७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ रुम रुम १७२ रुम रुम १७२
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ रुम रुम १७२ रुम रुम १७२
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ रुम रुम १७२ रुम रुम १७२
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ रुम रुम १७२ रुम रुम १७२
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ रुम रुम १७२ रुम रुम १७२
 १७२ रुम १७२ वनवन सा १७२ रुम रुम १७२ रुम रुम १७२

20

15

10

5

२ कवच आ



३ रु. ककुम. गु. शावन
मनसीत. जीर्ण. वृ. ज
य. प्र. स. धा. स. ग. स.
क. स्वा. म. य. क.
कवच आशुता



दवरात

१ थ. ३ रु. ककुम. गु. शावन
न. ल. ज. व. प्र. स. धा. स.
ता. सा. ति. स. त. स. म. म. म.
मि. न. अ. र. त. ध. त. ध. व.
मि. द. व. त. न. म. ह. ध. त. अ.
श. म. ॥

20

15

10

5

0

C.M.S.

5

10

15

20

25

30

नमो भगवते वासुदेवाय

उक्तं
विना सयतनं
न भवति

१ धृतरुद्रकृमाद्युतापन
सीधलुवधुननरुद्रव
नधास्यतामानीस
आकनस्यभवनवस
सिता। उासनकामज्यन
कधराअज्ञा। ८।

नमो

यगयाकमा



१ धृतरुद्रन॥ ककमहाग्रा
यननवस्य। रुद्रवतसधा
स। कायायाकमिसहस्य
यनस्याकनासधनआ
नरुद्रा

व० द

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ण ॐ

५२॥ ५२॥ ५२॥ ५२॥ ५२॥

श्री गंगा ज्योति

卷之五

गुरुद्वयगुरुसाध

इमाद

विद्यया ज्ञानं
मन्त्रं यज्ञं
साधनं

此上上

不不

दाकी नी नयन

五十六



धृज्ज कृम मरुत नोप न मरु
 ज्वर सखी सखी ॥ ज्वर सखी सखी
 माता नो सखी मरुत ॥ १२५ का
 माता नो ॥ १२५ का
 दमिव माता वरु वरु सी कर्मा
 माता वरु वरु सी कर्मा
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

२५ जन्म कर्म बन्ध की तनय मां नम
सीद्ध ० न सं ध्या न न सुत्र यत्र संधा
मासानी न ७ कुव सज्ञा ॥ ८ ॥



अनासायना
गसक

卷之四



ॐ नमः शिवाय । कृष्णाय नमः ।
सर्वभूतहितार्थं । कृष्णाय नमः ।
स्वामी । अतीत्यन्तात्मा स एव साक्षात्कृतः
मनसी रक्त उग्र तस्य । बुद्ध्या,
आरुक्कुपामा ८॥

20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय